कुछ कर

मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर। प्रभु ने दिया है यह अवसर, कुछ कर।
दुखों की आंच में सोने सा निखर, गमों की भट्टी में बन और प्रखर। मत बैठ. .
प्रकृति संग जीवन की प्रत्याशा लिख, भ्रमर के मधुर गुंजन की भाषा लिख।
तितली इठलाने की पिपासा लिख, सागर सरिता मिलन की आशा लिख।
लिख क्या क्या देता हमको ईश्वर। मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
सुमधुर गीत रच प्यार व श्रृंगार के। स्नेह, लाड, दुलार या इसरार के।
ममता, अनुराग और मनुहार के। विरह की वेदना और इंतजार के।
प्रीत के माधुर्य का गुणगान कर। मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
पवित्र गंगा व यमुना की गाथा गा। बद्री-केदार तीर्थों का पुण्य बता।
विराट हिमालय का वैभव दिखला। अयोध्या मथुरा का इतिहास सुना।
देवधरा भारत मां का गान कर। मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
बच्चों को संत ऋषियों का त्याग सुना। भारतीय संस्कृति का इतिहास पढ़ा।
महापुरुषों का आदर्श चरित्र बतला। ईमानदार और देशभक्त बना।
राष्ट्र के उत्थान में योगदान कर। मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
टूटती सड़कों की पीड़ा बतला, राशन का कालाबाजार दिखला।
किसान परेशान खाद बीज बिना, बिजली गई अब तू बहा पसीना।
जनता की समस्याओं को कर मुखर, मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
गलियों में मांगते बच्चों पर लेख, डरी सहमी बालिकाओं को देख।
इंसान बिक रहे खुले बाजार में, रोटी कपड़ा या रुपये चार में।
बचपन के दुश्मनों पर बरपा कहर, मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
शिक्षा, इलाज, रोटी, कपड़ा, घर, मंहगाई की भारी मार सब पर।
भूख, गरीबी, बेकारी की मार, अनेकों जिंदगियां मान गई हार।
कैसे खिलायें बच्चों को पेटभर, मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
दीन पर हुये अत्याचारों को लिख। नेताओं के कारनामों को लिख।
अफसरों के काले कामों को लिख। बिके हुये इन समाचारों को लिख।
भ्रष्टाचार कालाधन हो उजागर, मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
समय कहॉ था बच्चे दुलराने का, पत्नी से पल दो पल बतियाने का।
अब सेवा करवा और शिकवे सुन, गृहस्थी की फटी चादर फिर से बुन।
घर में ही खुशियां, मत ढूंढे बाहर। मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
हृदय को टटोलो, भूलें कबूलो। बिखरे मोती माला में पिरो लो।
संबंधों की उधड़ी गुदड़िया सी लो। आप थोड़ा घूंट जहर का पी लो।
सभी को मीत बना, रार भुलाकर। मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।
हम प्यार बढ़ायें नफरत भुलायें, सर्वे भवन्तुः सुखिनः संसार बनायें।
धर्म जाति आयु क्षैत्र भेद मत मान, हर जन सर्व भूतेषु आत्मवत् जान।
दुःखियों की सेवा कर प्रभु मानकर, मत बैठ हाथ पर हाथ धर, कुछ कर।

देख तेरी औकात क्या है?

तूने फिर बदल दी सरकार, देख तेरी औकात क्या है? मैंने
बाहर फेंका भ्रष्ट दरबार, देख तेरी औकात क्या है?
कुंवर जी याद करे ननसार, उदास गूंगा अंधा सरदार।
बना ली मरजी की सरकार, इससे बड़ी सौगात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
जिनके द्वारे तुम रिरियाते, घंटों तुम्हें इंतजार कराते।
अब खड़े याचक तेरे द्वार, पूछ इनकी औकात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
सूरमाओं ने चाटी धूल, हटाया हाथ खिलाया फूल,
बजीर पिट जाते प्यादों से, यह शतरंज की बिसात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
आपस में चली जुबानी जंग, गाली गलौच सुन जनता दंग,
सत्ता बदल बिन खून खराबा, जनतंत्र की करामात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
बिचौलियों ने मचाई लूट, शहजादे नहीं बोले झूठ।
सौ भेजते पांच पहुंचते, पिच्यानवे का हिसाब क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
जनता को देकर मंहगाई, भ्रष्टों ने चाटी खूब मलाई।
घोटालेबाजों पर प्रहार, देशभक्त तेरी बात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
तूने पहुंचाया चोटी पर, अब तूने ही धूल चटाई।
ठोक कर थोक में दिये वोट, नहीं देखा धर्म जात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
दिल्ली में अन्ना का वह अनशन, बाबा रामदेव का वह प्रण।
लोकपाल पर झूठे वादे, सत्य का देख प्रतिघात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
खूब बंट रही हरामखोरी, समर्थ कर रहे उसमें चोरी।
स्वाभिमानी हम हिन्दुस्तानी, उन्नति मांगे खैरात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
लो बना दी मोदी सरकार, अच्छे दिनों का हमें इंतजार।
वरना तुम भी निकलो बाहर, काम चाहिये जज्बात क्या है?
देख तेरी औकात क्या है?
तूने फिर बदल दी सरकार, बाहर फेंका भ्रष्ट दरबार,
देख तेरी औकात क्या है?

कविता केवल ....

कविता केवल उलझे हुये शब्दों का जाल नहीं है।

कविता केवल उपमा प्रतीक या अलंकार नहीं है।
कविता केवल सुनहरे अक्षरों का जंजाल नहीं है।
कविता केवल हास्य, वीर, करुण या श्रृंगार नहीं है।
कविता केवल अक्षर मात्रा की गिनती का हिसाब नहीं है।
कविता केवल संगीत की राग लय व सुरताल नहीं है।
कविता कवि, कागज, कलम की भी मोहताज नहीं है।
कविता लटकों झटकों की सुरीली आवाज नहीं है।
कविता केवल हंसी ठहाका व मनोरंजन नहीं है।
कुछ समय में उड़ जाये ऐसी कर्पूर गंध नहीं है।
कविता केवल सोरठा, दोहा, चौपाई नहीं है।
कविता क्या अगर दिल को छूने की गहराई नहीं है।

सोये राष्ट्र में चिंतन वेदना जगा दे उसे कविता कहते हैं।
सुनकर जिसे दौड़ पड़ें बलिदानी जत्थे उसे कविता कहते हैं।
रगों में पानी की जगह खून बहा दे उसे कविता कहते हैं।
निराशा में भर दे जीने की आशा उसे कविता कहते हैं।
मुर्दों में जान फूंक दे पत्थर पिघला दे उसे कविता कहते हैं।
नभ छेद कर बिन जलद बरसात करा दे उसे कविता कहते हैं।
इतिहास बदलने में तलवार से ज्यादा कलम काम आई है।
कलम की ताकत ने अनेकों अत्याचारी सल्तनतें ढहाई है।

गिरधारी ने मीरा के मुख से स्वयं कविता गाई थी।
राम ने स्वयं तुलसी के हाथों रामायण लिखवाई थी।
मरा मरा के छंद ने डाकू को संत वाल्मिकी बना दिया।
चंदरबरदायी ने कविता कर स्वामी का कर्ज चुका दिया।

परमात्मा का भाव भक्ति, ध्यान है कविता,
कबीर सूर तुलसी रसखान है कविता।
वेद, उपनिषद, गीता, पुराण है कविता।
बाइबिल, साखी और कुरान है कविता।
आरती, भजन-कीर्तन, अजान है कविता,
चिरकाल से जन जन का मान है कविता।
कविता केवल उलझे हुये शब्दों का जाल नहीं है।

अच्छा नहीं लगता (गजल)

वादा किया था ताउम्र साथ निभाने का, बीच में छोड़ के जाना अच्छा नहीं लगता।
कसमें खाई थी साथ जीने मरने की, अब यूं नजरें चुराना अच्छा नहीं लगता।
बेवफाई भी निभाये कोई वफा से, रोज सपने में आना अच्छा नहीं लगता।
आंखों में तेरे तस्वीर है महबूब की, इस पर काजल लगाना अच्छा नहीं लगता।
मालिक ने बख्शी है शोहरत और दौलत, बार बार ये जताना अच्छा नहीं लगता।
मारा उनके मुंह जूता तूने मलाला, गर बच्चियों को पढ़ाना अच्छा नहीं लगता।
लहू का रंग एक दिया मालिक ने इंसा में, एक कतरा भी बहाना अच्छा नहीं लगता।
इक घर दिया है रब ने कुछ मुद्धत के लिये, इसे बेनूर बनाना, अच्छा नहीं लगता।
मुझ पर भरोसा किया है तो अब शंका क्यूं, बार बार आजमाना अच्छा नहीं लगता।
पी तो लेते हैं यारों की संगत में पर, कुनबे को मुंह दिखाना अच्छा नहीं लगता।
माना नाकामी कबूलना मुश्किल मुझ को, पर सच को छुपाना भी अच्छा नहीं लगता।
'बंसल' ये मतलबी रिश्ते चाहे बिखर जायें, पर यादों को भुलाना अच्छा नहीं लगता।
वादा किया था ताउम्र साथ निभाने का, बीच में छोड़ के जाना अच्छा नहीं लगता।

उसी का करम था (गजल)

मैं तो बच गया फिर से हादसे में, दुश्मनों की बद्दुआओं में क्या दम था?
मौत का साया गुजरा नजदीक से, सलामत रहे बस उसी का करम था।
तूफान ने ढहा दिये किले कितने, महकाते गुलाबों पर तो रहम था।
कोड़ा मार कर चेताया है उसने, कुछ बड़ा होने का जिसको वहम था।
दिये सब बुझ गये मजारों के सिवा, हवाओं को बता ये किसका फन था।
जच्चाघर से कब्र तक का मुकम्मल सफर, नसीब से लम्हा भी ज्यादा न कम था।
बेबसी पर उलझ पड़ा खुदा से ही, देखो खून उसका इतना गरम था।
पेट के लिये पाप किया चोरी कर, बेटे पालना तो उसका धरम था।
बहुत तोहमतें लगाई गैरों पर, मारा कंस और जलाया रावन था।
कभी आईना साफ करके देखा दागदार तो अपना भी दामन था।
हंसते हंसते पी लिया जो पिलाया, कुछ नहीं हुआ असर, गर जहर कम था।
करतार कोई चला रहा जहां को, मैनें कुछ किया यह मेरा भरम था।
'बंसल' जिंदगी सांप सीढी का खेल, चढ़ने का नाज न गिरने का गम था।
मौत का साया गुजरा नजदीक से, सलामत रहे बस उसी का करम था।

अभी बाकी है। (गजल)

अभी तो झेला है सर्द हवाओं को ,बरफीला तूफान अभी बाकी है।
सहर दुपहरी का मंजर क्या देखा, जिंदगानी की शाम अभी बाकी है।

जो झेले थे सितम गैरों के थे, अपनों का इंतकाम अभी बाकी है।
रकीबों की अदावत देखी तूने, दोस्ती का इम्तिहान अभी बाकी है।

चिंगारी से उठा है यह दावानल, चरागों का अंजाम अभी बाकी है।
धारों में ही टूटने लगे किनारे, सैलाब का उफान अभी बाकी है।

आप तो बहक गये आब पीकर ही, हाथ में भरा जाम अभी बाकी है।
कातिल की आंख से गिरा है आंसू, छुपा कहीं इनसान अभी बाकी है।

खंजर पे लिखी है खंजर की कहानी, कलमों का ईमान अभी बाकी है।
बंसल तूने चूमा है घटाओं को, चूम ले आसमान अभी बाकी है।

सहर दुपहरी का मंजर क्या देखा, जिंदगानी की शाम अभी बाकी है।

थू सासर जा बेटी (हास्य पैरोडी)

लाडो परण बा जा बेटी, बरात ले क जा बेटी
एसी कार सूं जा बेटी, चीलगाड़ी स जा बेटी
पंच सितारा मं जा बेटी, आन बान स जा बेटी।
यो घर भी थारो ही छ, जद मरजी आ जा बेटी।
जद मरजी आ जा बेटी, थू सासर जा बेटी।

डोव शैम्पू स नहा बेटी, टब झाग म नहा बेटी।
तेल बदाम मंगवा बेटी, लक्मे की क्रीम लगा बेटी।
लैपटॉप थू मंगवा बेटी, फेसबुक प नत आ बेटी।
मोबाइल नवों ला पण, आखी रात न बतिया बेटी।
आखी रात न बतिया बेटी। थू सासर जा बेटी।

लेज चिप्स अर लिम्का बेटी, माणिकचंद गटका बेटी।
बीकानेरी भुजिया बेटी, टोस्ट बिस्कुट खा बेटी।
पान सुपारी मंगवा बेटी, टॉपर जिन्स सिलवा बेटी।
ढाटो बांध मूंडा क थू, फटफटी खूब भगा बेटी।
फटफटी खूब भगा बेटी। थू सासर जा बेटी।

संडे पिक्चर जा बेटी, होटल मं रोटी खा बेटी।
कोफी और परांठा बेटी, चिप्स, चाय, समौसा बेटी।
क्लब किटी मं जा बेटी, बर्गर बिरयानी खा बेटी।
सबन दीजै बासी रोटी, अर थू पिज्जा खा बेटी।
अर थू पिज्जा खा बेटी। थू सासर जा बेटी।

अपणौ रौब जमा बेटी, अपणी धाक दिखा बेटी,
अपणी बात मना बेटी, थारौ राज चला बेटी,
एक की तीन सुणा बेटी, दो चूल्हा करवा बेटी।
कोई टनटन करै तो झट थानै जा बेटी
झट थानै जा बेटी, थू सासर जा बेटी।

नास्तिक

मैं नहीं जानता कि इंसान को किसने बनाया पर मानता हूं ,
भगवान को निश्चय ही इंसान ने बनाया है।
साकार को घडकर छैनी हथौड़ी से, अपने मनपसंद आकार में,
पहनाये कपडे अपनी भावना के अनुरूप और प्रतिष्ठित कर दिया
पूरी निष्ठा और विश्वास के साथ मंदिर-मठ में।
अर्पित किया सर्वश्रेष्ठ नैवेद्य, सुगंधी और संगीत उस अनाम सत्ता के लिये।
पर जिसे भोगा स्वयं इंसान ने।
निराकार भी बसाया मानव ने अपने दिल में ।
एक विराट या सूक्ष्म सत्ता के रूप में।
अस्तित्व प्रमाणन हेतु रचे वेद, उपनिषद, पुराण और ग्रंथ, बाइबिल, कुरान,
दिल में बसे विश्वास को फैलाया संतों, गुरुओं और महात्माओं ने
आश्रमों, विद्यालयों, सत्संगों, उपदेशों से जगत में ।
सतत आरोपित कर रहे अपना विश्वास दूसरों पर
लच्छेदार प्रवचनों और सुमधुर भजनों द्धारा।
देखा तो नहीं किसी ने उसे पर मान लिया एक बहाना।
सुख दुख बांटने वाला या कर्मफल से न्याय करने वाला।
एक लक्ष्य हर अच्छे बुरे में सांत्वना देने वाला।
निर्भर ईश्वर सिर्फ इंसानी श्रद्धा और विश्वास पर ।
जिसने नहीं माना इस अवैज्ञानिक कुतर्क को बस उसी को
घोषित कर दिया पापी, काफिर, नास्तिक।

फीलगुड

नववर्ष आया, झोली भर खुशियां लाया।
सरसों के फूल, धनिये की खुशबू, गेंहूं की बालियां,
भरे खलिहान, दौड़ते बैलों के गले में बजती घंटियां।
सूंपड़े से अन्न बरसाती, खुशी से गीत गाती, मुस्काती; गांव की नार।
अधूरे सपने, सब होंगे पूरे
दादी का तीरथ, बाबा का चश्मा, बेटे की पढ़ाई, बेटी की विदाई,
गैया का रंभाना, छाछ की मनुहार।
टूटेगी कड़ी कर्ज की, अब चुकेगा साहूकार।
बंधन से छूटे जमीन, बैल, गहने।
नई पगड़ी बांध अब उठेगा सर।
बीती ठंडी बयार, होली का खुमार,
आया मधुमास, चारों ओर उल्लास।
बीता काम, थिरकते पांव, नीमड़ी की छांव, बतियाते गांव।
नववर्ष आया झोली भर खुशियां लाया।

नाना का घर

याद आता है नाना के घर जाना, शोर मचाती, हिचकोले खाती मोटर।
मां की गोद में, पसीने से तरबतरः बैठा उसका छोटा सा लाल,
ममता व आँचल से ढककर सभी बलाओं से महफूज।
पीपल के पेड़ से बंधा कल्याण नाम का ऊंचा चितकबरा घोड़ा,
जिसके माथे पर बना सफेद बड़ा टीका सा।
घोड़े पर लदा राशन, जो खास हमारे लिये ही खरीदा गया,
बनिये से कर्ज लेकर।
काठी पर घोड़े की लगाम थामे बैठा मैं, और पीछे मुझे संभाले बैठी मेरी माँ।
घोड़े के पैरों की टॉप, नानाजी की टिचकारी, पैरों में चूं-चूं करती मोचड़ियां,
नानी के पैर में छनछन बजते चांदी के जोट, और राग मिलाते पंछी।
याद आता है नाना के घर जाना।

धूलभरी कच्ची गडार, बरसाती नाले, नीम, पीपल, आम की छाँह।
रास्ते में फन फैलाये बैठे, नाग देवता से हाथ जोड़, रास्ता देने की प्रार्थना।
झाड़ियों की ओट से नवागंतुकों को निहारते खरगोश व नेवले,
पूंछ छुपाये भागते सियार।
आधे रास्ते में, रतनपुरा के खाल के किनारे खड़े, बूढ़े बरगद के तले विश्राम।
नाले किनारे, रेत खोद कर बनाये गड्ढे से, पीने के लिये,
लोटा भर लाया गया, मीठा ठंडा पानी।
घी चीनी आटे से बने सत्तू का कलेवा।
याद आता है नाना के घर जाना।

बरगद के लंबे तांतो को पकड़ कर झूलता बचपन
और मुंह को आता बुजुर्गों का कलेजा।
बड़बोले और लाल लाल तांतों को खाता मेरा छोटा सा मुंह,
जिन्हें गिराते वट पर बैठे हरे हरे मिट्ठू (तोते)।
फिर घुड़सवारी, पैदल चलने की हठ करता बालपन
और पहुंचने की जल्दी में सयाने।
नानाजी का ज्ञान-अफीम-धनिये की खुशबू,
अलसी के नीले, धनिये-अफीम के सफेद, चने के पीले फूल;
गेहूं की बालियां और बूँटे ।
याद आता है नाना के घर जाना।

गहरे सीढ़ीदार कुओं पर चलते रहट और चड़स की चूं चूं,
बैलों के गले में बजती घंटियां और उससे लय मिलाकर गीत गाते भूमिपुत्र।
रंग बिरंगे लूगड़ों में लिपटी अनाज साफ करती लुगाइयां।
अधनंगे बदन पछीटे, छियांपती, उचकणी, गुल्लीडंडा, सतूल्या,

दड़ी मार दूंचढ़ा खेलते; रस्सी कूदते, मिट्टी के घर बनाते छोरे-छोरी।
घाटी चढ़ते घोड़े के, टोल्यों पर फिसलते पांव
और सावधानी रखने की मिलती ताकीद।
सर्पिली पगडंडी के दोनों ओर उगी छोले, करोंदे, अचार (चिरोंजी)
और बेर की झाड़ियां; तेंदू के पेड़
जिनके फल पाने को ललचाता शहर का टाबर।
याद आता है नाना के घर जाना।

डूंगरी के माथे पर डांग के बीच बसा नानाजी का गांव।
कांकड़ पर पाहुनों के स्वागत में नाचते मोर।
खलिहानों में सूंपड़े से अनाज बरसाते
अपनी मेहनत के फल पर हर्षित किसान।
रेवड़ी पर भौंक कर डराने का प्रयास करते गंडक (कुत्ते)।
मंदिर में घंटी, टोकरी तथा झालर की धुन पर आरती गाते भक्त।
ओम् जय जगदीश हरे..... श्री रामचंद्र कृपाल....।
याद आता है नाना के घर जाना।

नानाजी का घर....
गोबर लिपा, गेरु पुता, खड़िया से रंगा,
सुन्दर मांडणों से सजा छपरेवाला ओसारा।
फिर पोळ जिस पर लाल काले कोल्हू की खपरैल,
दोनों ओर बने गोखढ़े व आळे द्वाळे।
दो भींतों के बीच मिंयाल, सुन्दर पांखुड़ियां लगाकर रखी जीण,
जिन पर टिके बलिंडे।
फिर डांडे जिन पर सियाली छा कर (किरण बांध कर) जमाये कवेलू।
मिंयाल पर नेज से बांधा हींदला व झोली, शिशुओं को सुलाने के लिये।
मियालों पर बीचोंबीच टंगे छीके, दूधदही, रोटियों को
ऊंदरों व बिल्लयों से बचाने के लिये।
आंगन के बीच तुलसी का बिरवा,
जहां जल चढ़ाना व घी का दिया जलाना नहीं भूलते कभी।
याद आता है नाना के घर जाना।

तिबारी के कोने में बंधा परिंडा और पक्षियों को चुग्गा डालने का थाल।
जहां चहकती रंगबिरंगी चिड़ियायें, गिलहरियां;
जिन्हें पकड़ने की कोशिश करते बच्चे।
परांडे पर थावलों पर रखे ठंडे पानी के बेवड़े और पास ही रखा करवा।
उसके नीचे बना छपस्या, जहां रखा हाथ धोने का पानी भरा लोटा।
याद आता है नाना के घर जाना।

पेवला में भरे होले या दंगी।
कच्ची कैरियों को आम बनाने के लिये लगाया पाल।
मौसम के अनुसार दांगी, फांग, बूटा, सरा (भुट्टा) खाने का मजा।
ढूमलों में भरा सामान और चूहों से बचा कर अलगनी पर टांगे बिस्तर,
अनाज को कीड़ों व चूहों से बचाने के बंउें
याद आता है नाना के घर जाना।

गांव का इलाज-सर्दी में लोंग, जायपत्री, केसर, कस्तूरी, तुलसी, शहद
बुखार में काली मिर्च-पताशा या अमृतधारा, फोड़ों में गमबलास,
खुजली में नीम की छाल।
मोच में बड़ के पत्ते, दस्त में अफीम, घाव पर घासलेट।
याद आता है नाना के घर जाना।

नानाजी गांव के 'खोथ्ळयो हाळो बाण्यो' चले जाते मुंह अंधेरे,
खुद के बनाये-कलाकंद, बेसन बर्फी और
मोटे-मोटे अलसी के तेल के सेवड़े बेचने;
रावां, झरण्यां, खोड़ा, पचकुई, मोखमपुरा जैसे छोटे-छोटे गांवों में;
परिवार का पेट पालने, अपने प्रिय कल्याण घोड़े के साथ।
वापसी में चूल्हा जलाने के लिये, जंगल से बीन लाते सूखी लकड़ियां।
याद आता है नाना के घर जाना।

तालाब से.. सिर पर छूमळी रख जमाया बेवड़ा, हाथ में बाल्टी भरकर,
कमर झुकाये, घाटी चढ़ती, पानी लाती मेरी नानी।
खेत पर रोटी देने जाती और वापसी में फरड़ों का भारा सिर पर लाती नानी।
ऊपले थापती, साल और ठाण साफ करती,
दूध निकालती, छाछ बिलौती नानी,
याद आता है नाना के घर जाना।

पापड़, खीचले, आलू के कापे, मुंगोड़ी, बिये (सिवइयां) बनाती नानी,
लालमिर्च, धनिया, हल्दी कूटती पीसती मसाले तैयार करती मेरी नानी,
भोर के गीतों के साथ हाथ घट्टी में गेंहूं व मक्का, नमक दलती नानी,
भुसेरे से ठोपले (डाले) भर-भर कर जानवरों की ठाण में भूसा भरती नानी,
ओखली में मूसल से कूटती व दासे पर लोढ़ी से चटनी व ठंडाई बांटती नानी,
चने, मेथी, पालक, आफू आदि की फान्सी बनाने के लिये,
आंगन व चद्दरों की छत पर पत्तियां सुखाती मेरी नानी।
याद आता है नाना के घर जाना।

खाने में मक्का की रोटी या राबड़ी वह भी गुड़ या छाछ के साथ।

खाटो (कढ़ी) नीबू या छाछ की और उसमें कभी हरे पत्ते कभी पकौड़ी।
और रायता-नीबू, छाछ, कैरी, इमली का,
उसमें डाली जाती पकौड़ी, बूंदी, पतोड़,।
पापड़, मुंगोड़ी, गट्टे, सेवड़े, कभी आलू कापे ,
दालें, दाना मेथी से झोल और चना दाल, मुंग मोगर, चौलाई की सूखी भाजी।
कभी दलिया, खिचड़ी, और चावल मीठे केसरिया या नमकीन,
अंगुलियां चाट-चाट खाते कैरी का मीठा अचार,
गांव में भी रोज नये स्वाद जिमाती नानी।
याद आता है नाना के घर जाना।

सांझ ढले चिमनी और लालटेन के उजाले में, चिथड़ों से गोदढ़ियां सीती नानी,
राजा रानी और परियों की कहानियां सुनाती नानी।
इन सबसे अलग दोपहर में अपने परिवार के साथ फटकारे मार,
ताश खेलती नानी।
विदाई की बेला में मां से गले मिल आंसू बहाती नानी।
एक कर्मठ और जीवट भरी जिंदगी, मौज मस्ती से जीती मेरी नानी,
याद आता है नाना के घर जाना।

और हम बच्चे खेतों में चरते, ज्वार की भरढ़ी या मक्का का भरडा।
कभी मसूर, चौला, भंवरलाट व बटले की फलियां, और जंगल जलेबी।
झगड़ते-पेड़ों से टूट कर गिरी शाखाऐं (अधपकी कैरियां) खाने के लिये।
मातायें चुनती पुवांड़िया, पौंचा, खुरिंजरा, बाथला, बाथली
सींदणी की फलियां जैसी सब्जियां।
याद आता है नाना के घर जाना

हम दिन में घर पर खेलते
सोलहसार, शेरबकरी, चंगापौ, चौपड़, ऊनापूरा, कोमच्या।
और शाम को पक्षियों के कलरव के बीच, पीपल के पेड़ के नीचे;
चोर सिपाही, रस्सीकूद, खो-खो, कबड्डी,
लंगड़ीटांग, पालीतोड़ या फिर कंचे।
मंदिर की देळ पर इतराते हुये लच्छा बांध लकड़ी का रंगबिरंगा भंवरा घुमाता,
सेठ लक्ष्मीचंदजी का डावडा कालू;
गोल चद्दर में दो छेद कर डोरे से चकरी घुमाते गरीब।
मोटे कागज की, बहुत लंबी पूंछड़ी वाली, बड़ी पतंग उड़ाते मेरे मामा।
याद आता है नाना के घर जाना।

भोर में तालाब पर जैसे सिमट आता है पूरा गांव।
दिशामैदान जाते, नहाते, इक दूजे से राम राम करते,

बीड़ी जर्दे की मनुहार करते गांवडेल।
ब्रह्मदेव से माफी मांग कर नीम की दातौन तोड़ते, बड़ पीपल पर जल चढ़ाते,
सूर्य को अर्ध्य देते, चींटी चुग्गा-मोर चुग्गा डालते, साक्षात् एकात्म सर्वभूतेषु।
याद आता है नाना के घर जाना।

पनघट पर ठिठौली करती ननद भाभी,
गिलोल से भाटे मार सुअे उड़ाता बाग का हाळी।
तालाब में नंग धडंग अठखेलियां करते, तैराकी सीखते किशोर,
पानी पीते ढोर, धोवणे से कूट लत्ते धोती लुगाइयां,
मछली की टोह में ध्यान लगाये तालाब के बीच बैठे बगुले,
डूंगरी के माथे पर, छोले के सुर्ख फूलों को चूमते, भगवान सूर्य नारायण।
याद आता है नाना के घर जाना।

मुंह अंधेरे जगाती मंगला आरती,
भगवान के नाम अर्पित धेला पैसा, ढोभा भर अनाज और
तीज त्यौहार पर सीधे की थाली पर पलता पंडत गोपाल का परिवार।
और अब . . . . .
पहाड़ गंजे, जंगल विलुप्त, सूखा तालाब,
नम आंखे, उदास मन।
वीरान हुआ मेरे बचपन का स्वर्ग।
याद आता है स्वर्गवासी नाना नानी का दुलार।
नानाजी का घर नानाजी का गांव।
याद आता है नाना के घर जाना।

छोटा बेटा

दुःख इस बात का नहीं है कि मां मेरे पास नहीं आती,
कष्ट ज्यादा इस बात का है कि मां छोटे के पास क्यों जाती है?
छोटे ने बहुत कष्ट दिये मां को,
कई बार छोटी बहू ने अपमान से आहत किया मां के निर्मल हृदय को।
फिर भी मां छोटे की हर जरूरत पर भाग भाग कर जाती है।
कभी बच्चा जनाने, कभी बीमारी के बहाने।
कभी पड़ौसी से झगड़ने और कभी नौकरी छूटने पर दुःख प्रकट करने।
छोटा कमजोर है मां उसे हमेशा सहारा देती है।

और मैं जिसने परिवार का पहुंचाया नई ऊंचाई पर,
अपने श्रम, बुद्धि और त्याग से, वंचित रहता हूं मां के दुलार से।
'मैं नहीं समझ पाया मां को, मां के दुलार को,
मां तेरी भावना को अब तक।'
मां ने कहा,
'बेटा छोटा अशक्त, कमजोर, दुर्बल रह गया तो इसमें मेरा ही दोष है।
अगर मैं नहीं बांधती इसे प्यार के बंधन में,
और छोड़ देती तेरी तरह जान की बाजी लगाकर,
लहरों व शार्कों की परवाह न कर खुले समुद्र में मोती चुनने,
घोंसले से बाहर निकाल उड़ना सिखा देती, तूफानी हवाओं में
खुले आसमान से तारे तोड़ कर लाने के लिये।
सैलाब के धारों के विपरीत तैरना सिखा देती,
गर लड़ना सिखा देती जमाने के झंझावतों से, मेरे आंचल का पहरा हटा कर।
तो आज यह भी कमजोर नहीं आत्मनिर्भर होता,
बस बेटा मैं तो उसी भूल का प्रयश्चित कर रही हूं, वहां वक्त जरूरत जा जा कर।

एक्सचेंज ऑफर. . .

कोई भी पुरानी बीवी सॉरी टीवी लाइये, नई ले जाइये।
एक्सचेंज ऑफर! सुनहरा अवसर। अपनी ब्लैक एंड व्हाइट को कलर में बदलवाइये।
पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें।
एक साल की मुफ्त वारंटी, पसंद न आने पर पैसे वापस।
डोल मेला बंपर आफर-एक फुल साइज के साथ दो कलैण्डर फ्री।

पार्टी पैसे वाली है

ज्यों ज्यों जवानी चढ़ने लगी, आंखें इधर उधर भटकने लगी।
पिताजी ने मन की बात जान ली, हमारा ब्याह करने की ठान ली।
तो आने लगी जन्म पत्रियों की बाढ़,
पंडितजी के ज्ञान से कुछ पास कुछ ना पास।
एक जगह लड़की देखने जाना पड़ा, सांवली सूरत से पाला पड़ा।
मैंने कहा, ''पिताजी यह तो काली है।''
'' गौरी को क्या चाटेगा पार्टी पैसे वाली है।''

हास्य दोहे

कालेज में मजा यही बस लड़की पट जाये।
शादी कर मजा लेने हनीमून पर जाये।
कोई मजा ले खाने में कहीं धन हरषाये।
बंसल को तो मजा यही, पेट साफ हो जाये।

खुदा गर मेरी हड्डी तोड़ दे, महिनों बिस्तर पर मुझे छोड़ दे।
तब तुम मिलने आना मित्रवर, मुझे इंतजार रहेगा तुम्हारे लिये। - - -

पैरोडी व्यंग्य

संपत्ति की न टूटे लड़ी, रिश्वत ले तू घड़ी घड़ी।
बाबा अन्ना आये गये काले धन की न सूची मिली। रिश्वत ले तू ...
इस जनता से डरना ही क्या इसके हाथोमें चूड़ियां पड़ी। रिश्वत ले तू
इस सत्ता से डरना ही क्या किसी के न लगी हथकड़ी। रिश्वत ले तू
इस वेतन से होता है क्या मंहंगाई आसमान चढी। रिश्वत ले तू
रुपया पैसा काला कहां, गांधीजी की तस्वीर जड़ी। रिश्वत ले तू

मम्मी जी आपने फरमाया

चुनाव में हार के बाद बेटा मां का पल्लू पकड कर सुबक रहा है।
मम्मी जी आपने फरमाया, झुग्गियों में जाकर खाना खाओ
फिर ये वोटर तुम्हारा है।
दिग्गी बाबा ने बताया खजाना दोनों हाथ लुटाओ, फिर ये राज तुम्हारा है।
राजा प्रताप ने समझाया, आरक्षण का झुनझुना बजाओ फिर ये सिंहासन तुम्हारा है।
अंग्रेजों ने आजमाया, जाति धर्म के नाम पर लड़ाओ फिर ये हिन्दुस्तान तुम्हारा है।
तो मैया हमने चल ली सबकी चाल, फिर भी जनता ने किया हमारा यह हाल।
कि कुर्सी पाकर यादव नाचै रे नाचै रे और हम छुपा रहे अपनी नाक नाक नाक।

मंहगाई भ्रष्टाचार ने लुटिया डुबाई हमारी,
और अन्ना ने अर्थी उठाई हमारी।
राजा और कलमाड़ी ने साख गिराई हमारी,
ममता करुणा की दया पर कुर्सी हमारी
कि सत्ता पाकर साइकिल भागे रे भागे रे और
हम मसलें अपने हाथ हाथ हाथ
कि सत्ता पाकर साइकिल भागे रे भागे

चार लाइनें मुक्तक
विपदा ने कुछ छीना नहीं रोये तो निवाले मिले।
चोरियों की बंदरबांट में वतन के रखवाले मिले।
आज क्या इतिहास में भी सत्ता के सूत्रधार साले मिले।
चुनावों का डर इतना, अपनों के ही होठों पर ताले मिले।

आस्तीनों में पाले थे जतन से काले नाग निकले।
होंगे खैरख्वाह मुश्किलों में बुजदिल भाग निकले।
थे रहनुमा हमारे कईयों के दामन में दाग निकले।
आसरा बस रब का अब, भरोसे ही दगाबाज निकले।

इस देश में अब सुकून कहां यहां नेताओं का साया है।
इस जंगल में में क्या रहना, यहां गीदड़ दल आया है।
नींद उड़ी मच्छर चूसे खून, सब गंदगी की माया है।
अनाज तो निपजा बहुत बच्चे भूखे, ब्याज चुकाया है।
खुल्ले सिक्के ना नोट मिलें सौ का ही सामान आया है।
सर उठाये घूमें बेईमान सच ही बार बार शर्माया है।

कईयों का सहारा जो था, कईयों के सहारे वो है।
मृत्यु से डराता था कईयों को, अब मरघट के किनारे वो है।
आसमान चढ़ा भरा घमंड में बहुत गरजा दमका अभिमानी।
धरती पर गिरा तो कैद हुआ अबला की मटकी बन पानी।

मोदी राहुल केजरी, किसको सौंपें सत्ता।
आपस में चोर बतावें, भ्रमित सारी जनता।
खरबों खर्च चुनावों का, कहो कहां से लाये।
ईमानदारी से तो, कौन हिसाब बताये।

दिल्ली के मैदान में बाबा दिखलाये दम,
कालेधन भ्रष्टाचार पर मौन बैठे मन।
बहिन मुलायम साथ मत पालो बाबा भ्रम।
सारी जनता जानती इनके भी कर्म।
राजघाट पर गांधी रोये
अब तो करो शर्म अब तो करो शर्म।

पुत्रमोह में फिर से राष्ट्र का बंटाढार।
चाणक्य सा प्रधान भी बैठा मौन लाचार।
सोना चांदी आसमान पर, रुपया चाटे धूल।
दागियों से संसद भरी, जनता करती भूल।

यूं ना टेसुऐ बहा गौरी, तेरा श्रृंगार बिखर ना जाये।
नयनों का कजरा तेरे कपोल द्वय पर पसर ना जाये।
चातक प्यासा पी नहीं पाया अभी हाला का प्याला।
अधरों तक आने से पहले जाम कहीं छिटक ना जाये।

अमृत कलश थोड़ा और रीता, लो जीवन का एक बरस फिर बीता।
वो वादे वो इरादे सब रहे अधूरे, नहीं हुआ कुछ मनचीता।
बुझी आशाऐं पस्त हौसले, टूटी उम्मीदें, रहा मन रीता का रीता।
हरे भरे इस वट का एक पात फिर टूटा, एक बरस फिर बीता।

साक्षरता के दोहे

तकनीक के इस युग में, निरक्षरता है शाप।
अंगूठा दिखाना छोड़ कर, कलम चलावें आप।
कानून बनाकर रोकिये, निरक्षर का मतदान।
रुपया दारु की जगह, बंटेगा अक्षर ज्ञान।
मिड डे में सब जीम रहे, साक्षर हुआ ना कोई।
ज्ञानदीप हृदय में जले, लालच से क्या होय?
सारे जगत में मना रहे, साक्षर दिवस आज।
भक्ति, ज्ञान, कला नहीं, लिखने की मोहताज।
मां सरस्वति की दया दृष्टि, जिन पर पड़ जावे।
शिक्षा रोके रुके नहीं, पत्थर ही गुरु बन जाये।

हिन्दी

मकसद हो हमारा हिन्दी को बढ़ाना, विशाल शब्द भंडार, पर्यायवाची का खजाना। मक.
देवनागरी लिपि इसकी, भारत जन्मस्थान, जुबान में है मिठास, मोहब्बत का तराना।
ब्राह्मी, पाली, अपभ्रंश, संस्कृत जननी इसकी, उर्दु, फारसी, अरबी से भी है याराना।
मत लगाओ, अल्प, अर्द्ध या पूर्ण विराम कहीं, सारी दुनिया में सरपट इसे दौड़ाना।
गुण इसका सभी भाषा के शब्दों को अपनाना, कलिष्ठता छोड़ कर सरल इसे बनाना।
हिन्दुस्तान का मान है और पहचान है हिन्दी, विदेश में जाकर भी इसे न भुलाना।
क्षैत्रिय भाषायें और हिन्दी सब बहनें बहनें हैं, वतन परस्ती हो तो इन्हें ना लड़ाना। मक

हाइकू
तन मन पर कितने ही घाव खाये हैं पर नालिश किस पर करे।

सभी घावों को खोल कर देखा, लिखा मिला अपनों का ही नाम।

पर, पग, जग, भाग्य, हौसले का ही साथ देते हैं।

हास्य क्लब के लिये

तीस दिनों के बाद आज मैं, ठहाके लगाने आया हूं।
वैशाखी पर चल कर भी मैं, हंसने व हंसाने आया हूं।
यूं ना समझना कि मैं अपना, दुख दर्द बताने आया हूं।
दुर्घटना का इतिहास भूगोल, अपने मुंह सुनाने आया हूं।
हास्य क्लब के प्रति बनता है, वो धर्म निभाने आया हूं।
पार्क छूट गया तो क्या मेरा, प्रार्थना करवाने आया हूं।
आपने किया उपकार उसका, कुछ कर्ज चुकाने आया हूं।
हादसे में मुझे संभाला सबने, आभार जताने आया हूं।
पद नहीं छीना अभी क्लब ने, यह खुशी मनाने आया हूं।
मेडिकल लीव की एप्लीकेशन, कुछ लेट लगाने आया हूं।
प्रताप चौक की वीर धरा पर, मैं भी फर्ज निभाने आया हूं।
एकादशी पुण्य दिन सबको, आज चाय पिलाने आया हूं।
पांच जनवरी को है प्रसादी, आमंत्रण दिलवाने आया हूं।
दुपहरी में आशीर्वाद गार्डन, आयें याद दिलाने आया हूं।

पत्नी के प्रति

सूने आंगन में बन कर बहार आई, सूखी बगिया में हरियाली छाई।
उगते सूरज सी चमके बिंदिया, चटके टेसू गमकी अमराई। सूने आंगन..
सदियों प्यासी मरुधरा में सावन ने आहट सुनाई,
थार में बहे सरस्वति, पोखर में शतदल सी छाई। सूने आंगन में
वीणा से झंकृत दिल के तार, चूड़ी खनके बजे शहनाई।
लाज से लाल हुआ दर्पण, सुबह उठ जब ली अंगड़ाई। सूने आंगन
पलकों की छांह में मौसम बसंती, जेठ की धूप भी सुहाई।
अंधियारी मावस बनी पूनम, पल्लू मुह में दबा मुस्काई। सूने आंगन
विद्या नहीं केवल किताबों में सीखी जग की सब चतराई।
कभी गरजी घनघोर घटा सी अंततः शीतल फुहारें ही लाई।
ममता सेवा लुटाई जग पर अपनी मान पीर पराई। सूने आंगन
दंश तानों का सहकर भी, उपवन में खुशियां बिखराई।
जन्म जन्मांतर साथ निभाये, रब से मांगू बस यही दुहाई। सूने आंगन में

गणतंत्र कैसे मनाऊं ?

अशिक्षा गरीबी, गंदगी और रोग, भूख कुपोषण, मृत्यु और शोक,
यहां राग मल्हार गाऊं? गणतंत्र. .
डाली डाली भ्रष्टाचार, राजनीति बनी व्यापार;
मन की पीड़ा कहां छिपाऊँ,? गणतंत्र...
वोटों के सौदागर आते, जाति धर्म के नाम लड़ाते,
बन रहे वोट यहां बिकाऊ। गणतंत्र....
आतंकी को मुर्ग बिरयानी, संत तरसे रोटी पानी,
दिल की व्यथा किसे सुनाऊं? गणतंत्र..
मेनका भई नारी, ना दीखे सीता, नैनों में उतरा पनघट जल बीता,
पुरा संस्कृति वैभव कहां पाऊं? गणतंत्र..
फिरौती सुपारी उद्योग भये, तंत्र जालिम, गण निर्जीव हुये,
फरियाद किसे सुनाऊं? गणतंत्र कैसे मनाऊँ?

बुढ़ापा कैसे कटे?

मांगे खाना, मिले ताना, सास बहू में खींचमताना,
कृतघ्न हुआ जमाना, बुढ़ापा कैसे कटे?
बहू न करे सत्कार, बेटा रहा दुत्कार,
छीना सब व्यौपार, ठन ठनपाल मदन गोपालं। बुढ़ापा....
बीमारियों का घेरा, औषधियों का डेरा, सेवा की दरकार। बुढापा कैसे कटे?
बूढ़ी चिड़िया बैठी मौन, सूखे ताल पूछे कौन? कछुये कहां शर्मसार? बुढ़ापा कैसे...
बेगाना घर का बगीचा, लहू से जिसे सींचा; गली के पिल्ले का प्यार। बुढ़ापा कैसे कटे?

ना कुछ मेरा है।

जो मेरा है वो तेरा है, जो तेरा है वो मेरा है।
जो मैं समझूं कि सब कुछ तेरा है तो तू भी समझ कि सब कुछ मेरा है।
वैसे... . ना कुछ तेरा है, ना कुछ मेरा हैं।
यह दुनिया बस रैनबसेरा है, छाया सब माया का घेरा है।
भोर तक ही पंछी का डेरा है, समझो मूढ़ मति का फेरा है। ना कुछ
तुझे जाना है, मुझे जाना है; तुझे आना है मुझे आना है।
जिसे जाना है उसे आना है, जिसे आना है उसे जाना है।
दुनिया में बस आना जाना है, पर कुछ ऐसा करके जाना है-
इतिहास के पन्नों में नाम लिखाना है।
तेरे मेरे के झंझट में क्यों खून बहावें, दिया है प्रभु ने जो मिल बांट कर खायें।
चंचला माया के लिये क्यों वक्त गंवायें।
प्रेम प्रीत की दुनिया में अलख जगायें।
भोर हुई है तो रात भी होगी, आओ मिलकर दिये जलायें। ना कुछ तेरा....